पशु-पक्षियों के प्रेम प्रसंग

नरेन्द्र देवांगन

साजन को ढूंढने जाती है

नर वन-बिलाव बड़ा मनमौजी जीव है। एकांत पंसद। अकेले रहेगा, लेकिन दूसरे के पास नहीं जाएगा। मादा वन-बिलाव बड़ी भावुक। प्रणय के मामले में पहले कदम वही उठाती है। प्रेम-विह्वल मादा अपनी मांद छोड़ प्रियतम की खोज में चल पड़ती है और बावली बनी वह तब तक वन-वन की खाक छानती फिरती है, जब तक उसे प्रेमी के चरण-चिन्ह नहीं दिख जाते। यदि ये चिन्ह ताज़े हुए, तो तेज़ी से वह उन्हीं पदचिन्हों पर दौड़ने लगती है। उसका अनुमान सही हो, तो प्रियतम से भेंट हो जाती है। लेकिन थोड़ी मान-मनौवल के उपरांत। अगर ये चिन्ह ताज़े न हुए तो वह उन्हीं के निकट बैठकर प्रतीक्षा करती रहती है कि कभी तो प्रिय इस राह से गुज़रेंगे।

जान की बाज़ी

मानव जाति के इतिहास में एक समय ऐसा भी था जब प्रेमिका को पाने के लिए लोगों को युद्ध करना पड़ता था और जान की बाज़ी लगानी पड़ती थी। आज यदि प्रेमिका के लिए जान की बाज़ी कोई लगाता है, तो वह है पानी का खूंखार जानवर घड़ियाल। घड़ियाल को प्रेमिका पाने के लिए अपने प्रतिद्वंदी से घमासान युद्ध करना पड़ता है, जो प्रायः घंटों चलता है। इस युद्ध में कभी-कभी एक को जान से भी हाथ धोना पड़ता है। जीतने वाला घड़ियाल आत्म विभोर होकर पूंछ और सिर को पानी के बाहर निकाले हुए अपनी प्रेयसी के चारों ओर चक्कर लगाता है और गले से ज़ोर की आवाज निकालता है, जो दरअसल उसकी प्रेम पुकार होती है।

सेवा भाव

प्रियतमा को रिझाने के लिए हर तरह की खुशामद यदि कोई करता है, तो वह है हाथी। जी-तोड़ खुशामद करने पर भी हाथी को प्रेमिका से प्रणय की स्वीकृति प्राप्त करने में हफ्तों या महीनों लग जाते हैं। इस अवधि में हाथी हथिनी

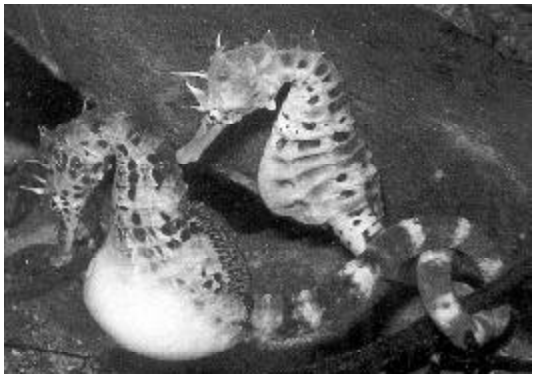

का साथ कभी नहीं छोड़ता। कभी बढ़िया खाद्य पदार्थ खोजकर उसे देता है, उसके स्नान में सहायक बनता है, तो कभी विश्राम के लिए आरामदेह स्थान खोजने में उसकी मदद करता है। अंततः वह हथिनी को इस बात का विश्वास दिलाकर ही रहता है कि उसका सच्चा प्रेमी वही है, कोई दूसरा नहीं।

प्रणय की भूख, नर को गर्भ

प्रियतमा से प्रणय की भीख मांगने का सबसे विचित्र तरीका अपनाता है समुद्री घोड़ा। यह समुद्री घोड़ा समुद्र में रहने वाली एक मछली है। इसके मुंह की बनावट घोड़ों से बहुत कुछ मिलती-जुलती है, इसीलिए इसे समुद्री घोड़ा कहा जाता है। आकार में यह दरियाई घोड़ों का एक लाखवां हिस्सा भी नहीं होता है। नर समुद्री घोड़े के पेट पर एक वैसी ही थैली होती है, जैसी मादा कंगारू के। नर बड़े ही दीन-भाव से अपनी प्रेमिका के पास जाकर खड़ा हो जाता है। बड़ी खुशामद और मिन्नत से प्रेमिका का दिल पसीजता है और वह अपने अंडे नर की थैली में दे देती है। तब नर अंडों के निषेचन की क्रिया करता है। थैली बंद हो जाती है। प्रेमी 'गर्भवान' हो जाता है।

पक्षियों में प्रणय निवेदन

पीलक और बटेर जैसे पक्षियों के अपवाद को छोड़कर

प्रायः नर पक्षी को ही मादा को रिझाना पड़ता है। वे अपने संगीत, सुंदर पंखों या अपनी योग्यता का प्रदर्शन करके अपनी प्रेयसी से प्रणय की भीख मांगते हैं। नर पक्षियों के रंग-बिरंगे चमकीले पर मादा को अपनी ओर आकृष्ट करने में काफी मदद देते हैं। जोड़ा बनाने के समय तो उनके पंख और भी भड़कीले हो जाते हैं। मोर में यह परिवर्तन बड़ी आसानी से देखा जा सकता है। जिन पक्षियों को अपने सुंदर पंखों पर गर्व होता, वे घंटों तक अपने परों को फुला-फुलाकर संवारते हैं। फिर मादा के सामने पहुंचकर नाचते हैं। इसके बाद हाव-भाव, नृत्य और मनुहारों का क्रम तब तक चलता रहता है, जब तक कि मादा रीझ नहीं जाती।

वर्षा ऋतु में मेघों को देख मोर नाच उठता है। प्रणय काल में मोर बड़ी संख्या में किसी पेड़ पर एकत्र हो जाते हैं। अपनी-अपनी प्रेयसी के सामने इठलाते, अपने पंखों को झिलमिलाकर कंपाते हैं। वे पंखों को लंबा करके पीछे की ओर कर लेते हैं। मोरनी न तो मोर की तरह सुंदर होती है और न उसके पास मोर जैसे शानदार लंबे पर होते हैं।

गाने वाले पक्षी पेड़ की डाल पर बैठकर ज़ोर-ज़ोर से गाते हैं। इन दिनों उनके गले में एक साज़ और स्वर में एक अजीब मधुरता आ जाती है और वे दिन-रात प्रणय गीत गाते रहते हैं। जिन पक्षियों को गाना नहीं आता है, वे केवल गले से आवाज़ करते हैं, ज़ोर-ज़ोर से बोलते हैं। इन सबके बावजूद इनमें प्रणय भावना के प्रकट करने की मर्यादाएं निश्चित हैं।

साथ ही जीना-मरना

प्रिय के बिछोह में प्राण त्याग देने के लिए प्रसिद्ध है सारस का प्रेम। नर और मादा सारस दोनों सच्चे अर्थों में जन्म-मरण के साथी होते हैं। सारस के जोड़े में से जब एक की मृत्यु हो जाती है, तो दूसरा भी खाना-पीना छोड़ देता है और अंततः अपने प्राण त्याग देता है। सारस अपनी प्रणय लीला के लिए भी प्रसिद्ध है। वर्षा काल में नर-मादा दोनों उल्लास से भरे एक-दूसरे के आसपास उछलते, चक्कर लगाते और अपने चौड़े पंख फैलाकर तथा गर्दन नीची करके हवा में ऊंची छलांग भरते हैं। बीच-बीच में वे ज़ोर-ज़ोर से तुरही की सी आवाज़ भी लगाते हैं।

पक्षी स्वयंवर

स्वयंवर में जिस तरह विवाह की इच्छुक युवती अपना पति स्वयं चुनती थी, इसी तरह रफस नामक मादा पक्षी अपना वर चुनती है। कई नर पक्षी प्रणयोन्मत्त होकर समूहबद्ध नृत्य करते हैं। मौसम आने पर नर काफी बड़ी संख्या में दलदली भूमि के बीच किसी सूखे स्थान पर एकत्र होकर नाचना-कूदना शुरू कर देते हैं और यह तब तक चलता रहता है, जब तक कोई मादा नहीं आ जाती। मादा बारी-बारी से सबके पास जाती है। हरेक का निरीक्षण करने के बाद किसी एक को चुन लेती है।

बहुपत्नी प्रथा

हंस एक ऐसा पक्षी है, जो बहुपत्नी प्रथा में विश्वास रखता है। हंस अपने सौंदर्य, नीर-क्षीर विवेक और ठुमकती चाल के लिए प्रसिद्ध रहा है। यह एक निर्भीक तथा रोमांच प्रिय पक्षी है। यह स्वभाव से बहुत नाज़ुक, एक ऊंचे दर्ज़े का प्रेमी, साथ ही ऊंचे दर्ज़े का घृणा करने वाला जीव भी है। नर हंस एक साथ कई पत्नियां रखता है।

दांपत्य का आदर्श

पक्षियों में कबूतर सबसे अधिक प्रेमी जीव माना जाता है। प्रणय मग्न कबूतर अपनी प्रियतमा को अपनी ओर आकृष्ट करने के लिए गुटरगू का अलमस्त राग अलापता हुआ उसके चारों ओर घूम-घूमकर नाचता है और प्रणय याचना करता है। आम तौर पर एक ही बार में जोड़े का चुनाव हो जाता है और जीवन पर्यंत निभाया जाता है। इसीलिए कपोत-कपोती हमेशा जोड़े में ही दिखते हैं।

प्रणय गायक

भारतीय साहित्य में जिन पक्षियों की सर्वाधिक चर्चा हुई है, उनमें कोयल और चातक (पपीहा) मुख्य हैं। वस्तुतः ये प्रणय गीत के गायक पक्षी माने जाते हैं। बसंत ऋतु में प्रणय की पुकार नर कोकिल के ही कंठ से फूटती है। नर कोकिल आम की डाल पर उन्मत्त कंठ से अपनी तान छेड़ देता है। आसपास कहीं बैठी हुई कोकिला प्रणय निवेदन सुनती है, तो वह स्वयं नर की ओर खिंची चली आती है।

इसी प्रकार नर पपीहा भी मौसम आने पर अनेक हाव-भाव से मादा का चित्त हरने की कोशिश करता है। नर

पहले मादा के पास आकर इस तरह से बैठ जाता है, मानो प्यार की भीख मांग रहा हो। फिर मधुर स्वर में अपना प्रणय गीत आरंभ करता है। मादा चुपचाप बैठी यह लीला देखती और प्रणय गीत सुनती रहती है।

कलाकार पक्षी

कलाप्रिय पक्षी नर बया घोंसला भी बहुत ही कलापूर्ण और अपनी प्रेयसी की रूचि के अनुकूल बनाता है। नर बया जोड़ा बनाने के समय को छोड़कर, बाकी महीने मादा की ही शक्ल का रहता है। पर जोड़ा बनाने का समय आने पर, उसके पर सुंदर और भड़कीले हो जाते हैं। तब उसकी आंख के नीचे से लेकर सीने के ऊपर तक का हिस्सा गहरा भूरा हो जाता है। सिर का ऊपरी हिस्सा और सीना पीला हो जाता है, जो पेट तक पहुंचते-पहुंचते सफेदी में बदल जाता है। वर्षा काल आरंभ होने पर नर बया एक घोंसला बनाता है। वह पहले केवल घोंसले का बाहरी ढांचा तैयार करता है और जब मादा उसका निरीक्षण करके उसे 'पास' कर देती है, तो समझिए उसने नर का प्रणय प्रस्ताव स्वीकार कर लिया।

मरने का अभिनय

नर और मादा नीलकंठ एक ही शक्ल के होते हैं। नर नीलकंठ मादा को खुश करने के लिए उसके आगे अपने करतब दिखाता हुआ पहले तो ऊपर उड़ जाता है, फिर नीचे की ओर ऐसे गिरता है मानो मर गया हो। पर ज़मीन पर आने से पहले ही वह संभलकर फिर ऊपर उड़ जाता है। इस प्रकार यह मादा को खुश करके जोड़ा बना लेता है।

(स्रोत फीचर्स)